CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2025 with Solution PDF-Set 2/1/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. प्रकृति के कई रंग हैं और उन रंगों में कोई होड़ नहीं है। रंगों की इस विशाल दुनिया में हम भी तो एक रंग ही हैं। पर हमारे साथ दिक्कत है। एक तो हमें अपने रंगों का पता नहीं है। दूसरा, हम दूसरों के रंगों से डरते हैं। हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है। दूसरे के जैसा होने की या उन्हें अपने जैसा करने की हमारी कोशिशों का कोई बहुत अर्थ भी नहीं है। कारण जबर्दस्ती चढ़ाए गए रंग देर तक टिकते ही नहीं है। सबको एक ही रंग में रंगने की कोशिश से बेहतर है कि हम एक-दूसरे को अपना सहयोग दें। दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है। इसी तरह आपस के साथ से हम भी कुछ नए रंग जिंदगी में जोड़ सकते हैं।

सुख सतरंगी है तो दुख के भी कई रंग हैं। फिर, सफेद और काले रंग के भी कई प्रतिरूप होते हैं। गायिका एमी ग्रांट कहती हैं, 'काले रंग के बिना किसी भी रंग को गहराई नहीं मिलती।' बात केवल परछाईं की नहीं है, पूर्णता की है। ज्यादातर लोग निराशा, अकेलापन, चुनौती, डर और उदासी के रंगों से दूर भागते हैं। वे जीवन में मुश्किल समय आते ही बेचैन हो उठते हैं जबकि मनुष्य की विकास यात्रा यही कहती है कि दुख, दर्द, कड़ी मेहनत, धैर्य और चुनौतियों के रंगों से मिलकर ही हमें जीत की चमक मिलती है। लेखक रे विलियम्स का मानना है कि बड़ी बारीकी से हम अपने दिमाग की नकारात्मक घेरबंदी करते चले जाते हैं, जो है उसके बारे में ध्यान नहीं देते, अभावों के विषय में सोचते चले जाते हैं और जीवन को जटिल बना लेते हैं।

प्रकृति हर दिन होली खेलती है, एक ही दिन में कई रंग बदलती है। दुख-दर्द का कोई रंग स्थायी नहीं होता। हमारी दुनिया रंगीन हो जाती है जब हम अपने रंगों से संतुष्ट हो जाते हैं और दूसरों का देखकर खुश होते हैं। [10 अंक]

1(i). 'हमें अपने रंगों का पता नहीं है' – से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं है।

(B) जीवन की विविधता का ज्ञान नहीं है।

(C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है।

(D) अपनी परंपराओं का ज्ञान नहीं है।

सही उत्तर: (C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में रंग व्यक्ति की अलग पहचान, गुणों और विशेषताओं का प्रतीक है।
- शब्द का अर्थ उसके आसपास के विचारों से ग्रहण करना चाहिए।

चरण 1: रंग का प्रतीकात्मक अर्थ पहचानें लेखक मनुष्यों को अलग-अलग रंग बताता है और दूसरों जैसा बनने की कोशिश का विरोध करता है। इसलिए अपने रंगों का पता न होने का अर्थ अपनी विशिष्ट क्षमताओं और गुणों से अनजान होना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखें (A) में केवल स्वभाव का उल्लेख है, जबकि यहाँ संपूर्ण विशेषताओं का आशय है। (B) जीवन की विविधता की बात करता है और (D) परंपराओं की; दोनों अपने गुणों को पहचानने का भाव व्यक्त नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष अपने रंगों का पता न होने का अर्थ अपनी विशेषताओं का ज्ञान न होना है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: रंग शब्द को वास्तविक रंग के बजाय व्यक्ति के गुणों और उसकी विशिष्ट पहचान से जोड़कर विकल्प चुनें।

1(ii). 'हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है' – पंक्ति में जीवन के बहुरंगी होने का अर्थ है – [1 अंक]

(A) जीवन का रंग-बिरंगा होना

(B) जीवन में दुख-तकलीफ का होना

(C) जीवन में सुख-दुख का होना

(D) जीवन का बहुत विशाल होना

सही उत्तर: (C) जीवन में सुख-दुख का होना

हल:

अवधारणा:

- बहुरंगी जीवन का अर्थ अनेक प्रकार के अनुभवों और परिस्थितियों से भरा जीवन है।
- गद्यांश में सुख और दुख दोनों को विविध रंगों से जोड़ा गया है।

चरण 1: प्रसंग का संकेत खोजें लेखक कहता है कि सुख सतरंगी है तो दुख के भी कई रंग हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जीवन में प्रसन्नता और कठिनाई दोनों आती हैं। बहुरंगी शब्द इन्हीं अनुभवों की विविधता का संकेत देता है।

चरण 2: विकल्पों में अंतर करें (A) शब्द का केवल बाहरी और शाब्दिक अर्थ देता है। (B) केवल दुख-तकलीफ तक सीमित है। (D) जीवन के विस्तार की बात करता है। (C) सुख-दुख दोनों को समेटता है और गद्यांश के आशय से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन के बहुरंगी होने का अर्थ जीवन में सुख-दुख का होना है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: बहुरंगी का आशय खोजते समय अगले अनुच्छेद में आए सुख और दुख के दोनों संकेत साथ पढ़ें।

1(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।

कथन : प्रकृति के कई रंग हैं और रंगों में कोई होड़ नहीं है।

कारण : प्रकृति सहज ही एक दिन में कई रंग बदलती है। [1 अंक]

(A) कारण सही है किंतु कथन गलत है।

(B) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँची जाती है।
- दो सत्य वाक्यों के बीच उचित व्याख्यात्मक संबंध होना भी आवश्यक है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें गद्यांश के आरंभ में स्पष्ट है कि प्रकृति के अनेक रंग हैं और उनके बीच होड़ नहीं है। अतः कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें अंतिम अनुच्छेद में प्रकृति के एक ही दिन में कई रंग बदलने की बात कही गई है। इसलिए कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध परखें दिन में रंग बदलना प्रकृति की परिवर्तनशीलता बताता है। इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि उसके रंगों के बीच प्रतिस्पर्धा क्यों नहीं है। इसलिए कारण पूरे कथन की सही व्याख्या नहीं करता। (A) और (B) सत्यता के निर्णय में गलत हैं; (D) अनुचित व्याख्यात्मक संबंध जोड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता। अतः उपयुक्त विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचें; फिर पूछें कि रंग बदलना रंगों में होड़ न होने का कारण कैसे बनता है।

1(iv). प्रकृति के माध्यम से लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति की विविधता मनुष्यों की अलग-अलग विशेषताओं की स्वीकृति सिखाती है।
- संतोष, परस्पर सहयोग और दूसरों की खुशी में प्रसन्न होना गद्यांश के केंद्रीय मूल्य हैं।

चरण 1: प्रकृति का उदाहरण समझें प्रकृति के अनेक रंग बिना होड़ के साथ रहते हैं। लेखक इसी उदाहरण से मनुष्यों की भिन्नता को सहज रूप में स्वीकार करने की सीख देता है।

चरण 2: जीवन के लिए संदेश निकालें हमें अपनी विशेषताओं से संतुष्ट रहना चाहिए और दूसरों की विशेषताओं को देखकर प्रसन्न होना चाहिए। सबको अपने जैसा बनाने के बजाय आपसी सहयोग से जीवन को समृद्ध बनाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का संदेश है कि हम विविधता स्वीकार करें, अपने गुणों से संतुष्ट रहें तथा ईर्ष्या और होड़ छोड़कर एक-दूसरे का सहयोग करें।

त्वरित सुझाव: संदेश लिखते समय प्रकृति के बिना होड़ वाले रंगों को मनुष्यों के सहयोग और संतोष से जोड़ें।

1(v). रे विलियम्स के अनुसार जीवन की जटिलता का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रे विलियम्स जीवन की जटिलता का कारण मनुष्य की नकारात्मक सोच मानते हैं।
- प्राप्त वस्तुओं की उपेक्षा और अभावों पर लगातार ध्यान असंतोष को बढ़ाते हैं।

चरण 1: विचार का आधार पहचानें गद्यांश के अनुसार मनुष्य बड़ी बारीकी से अपने दिमाग की नकारात्मक घेरबंदी करता चला जाता है। इसका आशय है कि वह अपनी सोच को परेशान करने वाले विचारों तक सीमित कर लेता है। इस मानसिक प्रवृत्ति के कारण जीवन का सकारात्मक पक्ष उसकी दृष्टि से ओझल होने लगता है।

चरण 2: जटिलता बनने की प्रक्रिया समझें व्यक्ति जो कुछ उसके पास है, उस पर ध्यान नहीं देता और जो उपलब्ध नहीं है, उसी के विषय में लगातार सोचता रहता है। प्राप्त साधनों, सुखों और विशेषताओं की उपेक्षा तथा अभावों की चिंता जीवन में असंतोष बढ़ाती है। रे विलियम्स इसी सोच को जीवन की जटिलता का कारण बताते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रे विलियम्स के अनुसार मनुष्य अपनी नकारात्मक सोच से जीवन जटिल बनाता है। वह उपलब्ध वस्तुओं पर ध्यान देने के बजाय अभावों के विषय में सोचता रहता है और अपने मन की नकारात्मक घेराबंदी करता जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन बातें जोड़ें: नकारात्मक सोच, प्राप्त वस्तुओं की उपेक्षा और अभावों पर लगातार ध्यान।

1(vi). 'दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है' – पंक्ति का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दो रंग अलग-अलग व्यक्तियों की विशेषताओं और अनुभवों के प्रतीक हैं।
- परस्पर सहयोग विविध गुणों को जोड़कर जीवन में नई संभावनाएँ उत्पन्न करता है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ देखें लेखक सबको एक रंग में रंगने के बजाय एक-दूसरे का सहयोग करने को बेहतर मानता है। इसके तुरंत बाद दो रंगों के मिलने से नया रंग बनने की बात आती है। इसलिए यहाँ रंगों का मिलना लोगों के साथ और सहयोग का प्रतीक है।

चरण 2: नए रंग का अर्थ स्पष्ट करें जब भिन्न गुणों, अनुभवों और विचारों वाले लोग मिलकर कार्य करते हैं, तो उनका सहयोग नई सोच और नई संभावनाओं को जन्म देता है। वे एक-दूसरे के गुणों से सीखकर जीवन को अधिक समृद्ध बना सकते हैं। इसका आशय किसी की पहचान मिटाकर उसे अपने जैसा बना लेना नहीं है; गद्यांश जबरदस्ती चढ़ाए रंगों के टिकाऊ न होने की बात भी कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि अलग-अलग विशेषताओं वाले व्यक्तियों का आपसी साथ और सहयोग जीवन में नई संभावनाएँ तथा अनुभव जोड़ता है। विविधता का मेल जीवन को अधिक समृद्ध और सुंदर बनाता है।

त्वरित सुझाव: दो रंगों को दो व्यक्तियों के अलग गुण मानें और नए रंग को उनके सहयोग से मिलने वाली नई संभावना लिखें।

1(vii). 'प्रकृति हर दिन होली खेलती है' – से क्या अभिप्राय है ? इसके माध्यम से क्या संदेश दिया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति का होली खेलना उसके निरंतर बदलते रंगों और रूपों का रूपक है।
- जीवन में दुख स्थायी नहीं हैं; संतोष और दूसरों की खुशी स्वीकार करने से जीवन सुंदर बनता है।

चरण 1: होली के रूपक का अभिप्राय बताएँ होली में अनेक रंग दिखाई देते हैं। उसी प्रकार प्रकृति एक ही दिन में कई रंग और रूप बदलती है। लेखक ने इस विविधता तथा परिवर्तनशीलता को प्रकृति का प्रतिदिन होली खेलना कहा है। इसका आशय किसी वास्तविक त्योहार का रोज मनाया जाना नहीं, बल्कि प्रकृति में रंगों का निरंतर बदलना है।

चरण 2: जीवन से जुड़ा संदेश स्पष्ट करें प्रकृति का कोई एक रंग स्थायी नहीं रहता। इसी प्रकार जीवन में दुख-दर्द की परिस्थिति भी सदा नहीं रहती। इसलिए कठिन समय से घबराकर निराश होने के बजाय परिवर्तन पर विश्वास रखना चाहिए। गद्यांश यह भी कहता है कि अपने रंगों से संतुष्ट होकर और दूसरों के रंग देखकर खुश होने पर हमारी दुनिया रंगीन बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष इसका अभिप्राय है कि प्रकृति प्रतिदिन अनेक रंग और रूप बदलती है। संदेश यह है कि दुख-दर्द स्थायी नहीं होते; हमें परिवर्तन स्वीकार करना, अपने गुणों से संतुष्ट रहना और दूसरों की विशेषताओं में भी खुशी पाना चाहिए।

त्वरित सुझाव: दोनों माँगें अलग पूरी करें: पहले प्रकृति के बदलते रंगों का अर्थ लिखें, फिर दुख की अस्थिरता और संतोष का संदेश।

2. है दीप एक पर मोल सूर्य से भी भारी
है व्यक्ति एक वर्तिका, दीप धरती सारी
देखो न दुखी हो व्यक्ति, उठे इंसानी लौ,
वनखंड जलाती सिर्फ एक ही चिनगारी।
है झंझापथ, पद आहत, दीपक मद्धिम है
संघर्ष, रातकाली, मंजिल पर रिमझिम है
लेकिन पुकारता आ पहुँचा युग इंसानी
दो कदम रह गया स्वर्ग चढ़ाई अन्तिम है।
दीपक, तेरे नीचे घिर रहा अँधेरा है
सोने की चमक तले अनीति का डेरा है
तू इंसानी जीवन की रात मिटा, वरना
इंसान स्वयं बनकर आ रहा सवेरा है। [8 अंक]

2(i). 'है दीप एक ..... सूर्य से भी भारी' – पंक्ति का आशय है – [1 अंक]

(A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है।
(B) अकेला दीपक सूर्य के प्रकाश से अधिक प्रकाश प्रदान करने में सक्षम है।
(C) एक अकेला प्रकाश का स्रोत सूर्य से अधिक मूल्यवान है।
(D) दीपक सूर्य की ऊर्जा से अधिक ऊर्जा अपने भीतर रखता है।

सही उत्तर: (A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है।

हल:

अवधारणा:

- कविता के प्रतीकों का अर्थ पूरे पद्यांश के सामाजिक संदर्भ में ग्रहण करना चाहिए।
- दीप या चिनगारी व्यक्ति की परिवर्तनकारी शक्ति को प्रकट करते हैं।

चरण 1: पंक्ति का सांकेतिक अर्थ समझना कवि कहता है कि एक व्यक्ति भी तुच्छ नहीं है। उसकी जागी हुई मानवीय चेतना शोषण की शक्तियों को चुनौती दे सकती है। एक चिनगारी के पूरे वनखंड को जला देने का उदाहरण इसी सामर्थ्य को पुष्ट करता है। इसलिए अकेले शोषित व्यक्ति में पूरे शोषक वर्ग का मुकाबला करने की शक्ति बताई गई है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (B) प्रकाश की मात्रा, (C) प्रकाश-स्रोत के शाब्दिक मूल्य और (D) ऊर्जा की मात्रा की तुलना करते हैं। कविता में दीपक तथा सूर्य की वैज्ञानिक तुलना नहीं है। उसका विषय इंसानी जीवन में अन्याय और शोषण के विरुद्ध जागृति है; इसलिए ये तीनों अर्थ प्रसंग के अनुरूप नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष एक अकेला शोषित व्यक्ति संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली हो सकता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: दीपक और सूर्य की तुलना को प्रकाश-विज्ञान से नहीं, आगे आए शोषण और मानवीय जागरण के संदर्भ से जोड़ें।

2(ii). 'इंसानी जीवन की रात मिटा' – से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) शोषित वर्ग के जीवन से रात्रि को दूर करना

(B) शोषित वर्ग के घरों को प्रकाशित करना

(C) इंसानों के जीवन से अंधकार को दूर करना

(D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना

सही उत्तर: (D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना

हल:

अवधारणा:

- काव्य में रात अभाव, अन्याय और शोषण की प्रतीक है।
- प्रतीकात्मक कथन का आशय आसपास की पंक्तियों के सहारे निर्धारित होता है।

चरण 1: रात का संदर्भ समझना इस कथन से पहले कवि कहता है कि सोने की चमक के नीचे अनीति का डेरा है। अतः यहाँ रात साधारण रात्रि नहीं, शोषित मनुष्यों के जीवन में व्याप्त अभाव और अधिकारहीनता है। उसे मिटाने का अर्थ उनके कष्टों को दूर करना और उन्हें उनका उचित अधिकार दिलाना है।

चरण 2: विकल्पों में सबसे उपयुक्त आशय चुनना विकल्प (A) रात्रि दूर करने और (B) घरों में प्रकाश करने का शाब्दिक अर्थ देते हैं; वे अन्याय के सामाजिक संदर्भ को नहीं व्यक्त करते। विकल्प (C) अंधकार हटाने की सामान्य बात करता है, पर उसके ठोस सामाजिक अर्थ को स्पष्ट नहीं करता। विकल्प (D) अभाव दूर करने और अधिकार देने के माध्यम से कवि का पूरा आशय प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अभिप्राय शोषित वर्ग के अभावों को दूर करके उन्हें अधिकार देना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: रात का अर्थ तय करते समय उससे ठीक पहले आए अनीति शब्द को आधार बनाकर सबसे स्पष्ट सामाजिक विकल्प चुनें।

2(iii). कॉलम-1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए :

कॉलम-1	कॉलम-2
(क) मद्धिम दीपक	(1) लक्ष्य प्राप्ति के सीमित साधन
(ख) झंझापथ	(2) विपरीत परिस्थितियाँ
(ग) आहत पद	(3) घायल अंग

विकल्प : [1 अंक]

(A) क-2, ख-3, ग-1

(B) क-1, ख-2, ग-3

(C) क-3, ख-1, ग-2

(D) क-1, ख-3, ग-2

सही उत्तर: (B) क-1, ख-2, ग-3

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ और कविता के प्रसंग का मेल करके प्रत्येक पद का अलग सुमेल करना चाहिए।
- मद्धिम का अर्थ मंद, झंझा का अर्थ तूफान और आहत का अर्थ घायल है।

चरण 1: तीनों पदों का अर्थ निर्धारित करना मद्धिम दीपक का प्रकाश कम है; वह लक्ष्य तक पहुँचने के सीमित साधनों का संकेत करता है, इसलिए (क) का मेल (1) से है। झंझापथ तूफानी रास्ता है, जो विपरीत परिस्थितियों को व्यक्त करता है; अतः (ख) का मेल (2)

से है। आहत पद का सीधा अर्थ घायल पैर है, इसलिए (ग) का मेल घायल अंग अर्थात (3) से है।

चरण 2: सुमेल का विकल्प से मिलान करना इस प्रकार क्रम क-1, ख-2, ग-3 बनता है। विकल्प (A) में तीनों संबंध बदल जाते हैं। विकल्प (C) मद्धिम दीपक को घायल अंग मानता है, जो अनुचित है। विकल्प (D) में क का संबंध ठीक है, पर झंझापथ और आहत पद के अर्थ आपस में बदल दिए गए हैं। केवल विकल्प (B) में तीनों सुमेल सही हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेल क-1, ख-2, ग-3 है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले आहत पद को घायल अंग से जोड़ें; फिर झंझापथ को विपरीत परिस्थितियों से मिलाकर पूरा क्रम जाँचें।

2(iv). 'इंसान स्वयं सवेरे का रूप धारण कर आ रहा है' - पंक्ति के माध्यम से किसे क्या चेतावनी दी गई है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सवेरा नई चेतना और अन्याय से मुक्ति का प्रतीक है।
- चेतावनी का लक्ष्य और उसका संदेश दोनों स्पष्ट करने चाहिए।

चरण 1: चेतावनी पाने वाले की पहचान सोने की चमक और अनीति के डेरे के उल्लेख से स्पष्ट है कि चेतावनी शोषक तथा संपन्न सत्ताधारी वर्ग को दी गई है। उसके वैभव के नीचे साधारण मनुष्य का जीवन अभाव और अन्याय से घिरा है। कवि उसी वर्ग को शोषितों का जीवन सुधारने के लिए पुकारता है।

चरण 2: चेतावनी का आशय कवि कहता है कि शोषक वर्ग समय रहते अन्याय समाप्त करे और पीड़ितों के अभाव दूर करे। ऐसा न करने पर जाग्रत मनुष्य स्वयं परिवर्तन की शक्ति बनकर उठेगा और शोषण का अंधकार मिटा देगा। सवेरे का रूप धारण करके आने का अर्थ इसी मानवीय जागरण और नए न्यायपूर्ण जीवन का आगमन है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषक वर्ग को चेतावनी है कि वह अन्याय दूर करे, अन्यथा जाग्रत शोषित मनुष्य स्वयं संघर्ष करके शोषण समाप्त कर देगा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले शोषक वर्ग का नाम लिखें और फिर समय रहते अन्याय न मिटाने का परिणाम स्पष्ट करें।

2(v). 'वनखंड जलाती है एक चिनगारी' – पंक्ति से क्या अभिप्राय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चिनगारी छोटे रूप में उपस्थित बड़ी परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक है।
- कविता का सामाजिक संदर्भ किसी प्राकृतिक उदाहरण का वास्तविक आशय स्पष्ट करता है।

चरण 1: उदाहरण का प्रत्यक्ष अर्थ एक छोटी-सी चिनगारी विशाल वनखंड में आग फैला सकती है। आरंभ में उसका आकार बहुत छोटा होता है, फिर भी उससे उत्पन्न प्रभाव अत्यंत व्यापक हो सकता है। इसलिए किसी शक्ति का महत्त्व केवल उसके आकार या संख्या से तय नहीं किया जा सकता। इसी उदाहरण से कवि अकेले मनुष्य की क्षमता समझाता है।

चरण 2: व्यक्ति की शक्ति से संबंध पद्यांश में इंसानी लौ उठाने का आह्वान है। उसका आशय है कि अन्याय के विरुद्ध जागा हुआ एक व्यक्ति भी दूसरों में चेतना जगा सकता है और व्यापक संघर्ष की शुरुआत कर सकता है। सीमित साधन या अकेलापन उसकी परिवर्तनकारी शक्ति को समाप्त नहीं करते। जैसे चिनगारी वनखंड को जला देती है, वैसे ही एक जाग्रत मनुष्य शोषण की व्यापक व्यवस्था को चुनौती देने की प्रेरणा बन सकता है। अतः व्यक्ति को दुखी और निराश होकर निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का अभिप्राय है कि एक अकेला जाग्रत व्यक्ति भी लोगों में चेतना जगाकर शोषण और अन्याय के विरुद्ध व्यापक

परिवर्तन की शुरुआत कर सकता है।

त्वरित सुझाव: चिनगारी को जाग्रत व्यक्ति और वनखंड में फैलती आग को व्यापक सामाजिक परिवर्तन से जोड़कर आशय लिखें।

2(vi). 'इंसानी युग आने और स्वर्ग के दो कदम दूर रह जाने' – से क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंसानी युग मानवीय गरिमा, न्याय और समानता पर आधारित जीवन का संकेत है।
- स्वर्ग तथा अंतिम चढ़ाई संघर्ष के निकट आते सुखद परिणाम के प्रतीक हैं।

चरण 1: इंसानी युग का आशय कवि को विश्वास है कि मनुष्य की चेतना जाग रही है और शोषण के विरुद्ध संघर्ष आगे बढ़ चुका है। इंसानी युग आने का अर्थ ऐसे समाज की संभावना निकट होना है जहाँ मनुष्य का सम्मान हो, अन्याय घटे और पीड़ितों को उनके अधिकार मिलें। यह किसी निश्चित तिथि की घोषणा नहीं, मानवीय चेतना में आए परिवर्तन पर आधारित आशा की अभिव्यक्ति है।

चरण 2: स्वर्ग की निकटता का अर्थ स्वर्ग से यहाँ अभिप्राय धरती पर सुख, न्याय और सम्मान से भरे जीवन से है। दो कदम शेष रहने और अंतिम चढ़ाई का अर्थ है कि लंबा कठिन संघर्ष अपने लक्ष्य के निकट पहुँच गया है। आहत पैरों, मंद दीपक और काली रात के बावजूद मनुष्य को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। शेष कठिनाइयों को पार करने के लिए प्रयास बनाए रखना आवश्यक है; तभी बेहतर जीवन का लक्ष्य प्राप्त होगा। इन पंक्तियों में निकट आती सफलता का विश्वास और संघर्ष जारी रखने की प्रेरणा साथ-साथ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अर्थ यह है कि न्यायपूर्ण मानवीय समाज का आगमन निकट है; सुखमय जीवन पाने के लिए संघर्ष की अंतिम बाधाएँ पार करनी बाकी हैं।

त्वरित सुझाव: इंसानी युग का अर्थ न्यायपूर्ण समाज और स्वर्ग का अर्थ सुखमय धरती बताकर अंतिम प्रयास की आवश्यकता जोड़ें।

3(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
राजमार्ग (हाईवे) पर पिताजी की गाड़ी का अचानक बंद हो जाना [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, वातावरण और भाव अपनी भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। घटनाओं का स्वाभाविक क्रम और एक स्पष्ट केंद्रीय भाव पाठ को प्रभावशाली बनाते हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में संक्षिप्त शीर्षक, विषयानुकूल आरंभ, घटना का विकास और सार्थक अंत रखें। यह अनुभवपरक लेख है; इसमें पत्र जैसा पता या संबोधन आवश्यक नहीं है।

चरण 1: विषय और अभिव्यक्ति का चयन घटना को समस्या, प्रयास और समाधान के क्रम में रखें। सड़क का दृश्य, परिवार की प्रतिक्रिया तथा सुरक्षा के लिए उठाए गए कदम वर्णन को वास्तविक बनाते हैं। लेखक की अनुभूति के साथ किसी छोटे अनुभव का व्यापक अर्थ भी उभरना चाहिए।

चरण 2: लेख का प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक सबसे ऊपर लिखें। इसके बाद प्रथम पुरुष में एक सुसंगत अनुच्छेद दें। शुरुआत में प्रसंग स्पष्ट करें, मध्य में अपनी भागीदारी और प्रतिक्रिया बताएँ तथा अंतिम वाक्य में अनुभव से मिली सीख व्यक्त करें। अनावश्यक विवरण, विषय से बाहर की बातें और घटनाओं की पुनरावृत्ति से बचें। नीचे दिया गया नमूना लगभग निर्धारित शब्द सीमा में है; विद्यार्थी इसी केंद्रीय भाव पर अपना मौलिक अनुभव भी लिख सकते हैं।

चरण 3: पूरा नमूना रचनात्मक लेख **राजमार्ग पर बंद गाड़ी**

उस दिन हम छुट्टियाँ बिताने गाँव जा रहे थे। राजमार्ग पर गाड़ियाँ तेजी से दौड़ रही थीं। अचानक हमारी गाड़ी झटके खाकर बंद हो गई। पिताजी ने उसे सावधानी से किनारे लगाया और चेतावनी वाली बत्तियाँ जला दीं। चारों ओर सुनसान देखकर मुझे घबराहट हुई, लेकिन माँ ने धैर्य रखने को कहा। हम यातायात से दूर सुरक्षित स्थान पर खड़े हो गए। पिताजी ने सहायता सेवा को फोन किया। प्रतीक्षा करते समय मैंने छोटे भाई को कहानी सुनाकर व्यस्त रखा। कुछ देर बाद सहायता वाहन आया। मैकेनिक ने खराबी ठीक की तो सबके चेहरे खिल उठे। यात्रा फिर शुरू हुई। उस अनपेक्षित विराम ने मुझे सिखाया कि संकट में घबराने के बजाय संयम, सावधानी और सहयोग से रास्ता निकलता है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत नमूने में विषय का निर्वाह, घटनाओं का क्रम, व्यक्तिगत अनुभूति और सार्थक समापन एक साथ आते हैं। रचनात्मकता अनुभव के सजीव प्रस्तुतिकरण और सहज भाषा से उभरती है।

त्वरित सुझाव: पहले आरंभ, मुख्य घटना और अंतिम अनुभूति के लिए एक-एक संकेत लिखें; फिर इन्हें जोड़ते हुए लगभग 120 शब्दों का लेख बनाएँ।

3(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
बड़े भाई / बहन की शादी में मेरी भूमिका [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, वातावरण और भाव अपनी भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। घटनाओं का स्वाभाविक क्रम और एक स्पष्ट केंद्रीय भाव पाठ को प्रभावशाली बनाते हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में संक्षिप्त शीर्षक, विषयानुकूल आरंभ, घटना का विकास और सार्थक अंत रखें। यह अनुभवपरक लेख है; इसमें पत्र जैसा पता या संबोधन आवश्यक नहीं है।

चरण 1: विषय और अभिव्यक्ति का चयन व्यक्तिगत अनुभव में अपनी भूमिका केंद्र में रखें। तैयारियों की सूची देने के साथ किसी छोटी घटना, संवाद अथवा अनुभूति से लेख को जीवंत बनाएँ। जिम्मेदारी निभाने और पारिवारिक स्नेह की अनुभूति को अंत में जोड़ने से विषय का उद्देश्य स्पष्ट होता है।

चरण 2: लेख का प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक सबसे ऊपर लिखें। इसके बाद प्रथम पुरुष में एक सुसंगत अनुच्छेद दें। शुरुआत में प्रसंग स्पष्ट करें, मध्य में अपनी भागीदारी और प्रतिक्रिया बताएँ तथा अंतिम वाक्य में अनुभव से मिली सीख व्यक्त करें। अनावश्यक विवरण, विषय से बाहर की बातें और घटनाओं की पुनरावृत्ति से बचें। नीचे दिया गया नमूना लगभग निर्धारित शब्द सीमा में है; विद्यार्थी इसी केंद्रीय भाव पर अपना मौलिक अनुभव भी लिख सकते हैं।

चरण 3: पूरा नमूना रचनात्मक लेख **भैया की शादी और मैं**

भैया की शादी तय होते ही घर में उत्साह छा गया। मुझे लगा कि अब अपनी जिम्मेदारी दिखाने का अवसर मिला है। मैंने मेहमानों की सूची बनाई और निमंत्रण भेजने में पिताजी की सहायता की। खरीदारी के समय सामान सँभालना और छोटे बच्चों को व्यस्त रखना भी मेरा काम था। विवाह वाले दिन मैं द्वार पर खड़ा होकर मेहमानों का स्वागत कर रहा था। किसी को पानी चाहिए था, तो किसी को अपने कमरे का रास्ता पूछना था। बीच में वरमाला गायब मिली तो मैंने उसे सजावट वाले कमरे से खोज निकाला। सबने राहत की साँस ली। थकान के बावजूद मन खुश था। विदा के बाद भाभी घर आईं तो मैंने उनका स्वागत किया। इस समारोह ने मुझे सिखाया कि खुशी बाँटने के साथ जिम्मेदारी निभाना भी जरूरी है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत नमूने में विषय का निर्वाह, घटनाओं का क्रम, व्यक्तिगत अनुभूति और सार्थक समापन एक साथ आते हैं। रचनात्मकता अनुभव के सजीव प्रस्तुतिकरण और सहज भाषा से उभरती है।

त्वरित सुझाव: पहले आरंभ, मुख्य घटना और अंतिम अनुभूति के लिए एक-एक संकेत लिखें; फिर इन्हें जोड़ते हुए लगभग 120 शब्दों का लेख बनाएँ।

3(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जीव-जंतुओं का घटता संसार [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय को अनुभव, दृश्य और संवेदना से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ घटती जैव विविधता के प्रति चिंता और संरक्षण की प्रेरणा मुख्य भाव हैं।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, प्रभावी आरंभ, विषय का स्वाभाविक विस्तार और सार्थक समापन रखा जाता है।

चरण 1: लेख का प्रारूप और विषय योजना शीर्षक विषय के अनुरूप रखें। किसी परिचित दृश्य, जैसे पक्षियों की घटती चहचहाहट, से आरंभ करें। फिर जंगलों के विनाश, प्रदूषण और शिकार का उल्लेख करके मनुष्य तथा जीव-जंतुओं के संबंध को स्पष्ट करें। अंत में संरक्षण का व्यावहारिक संकल्प व्यक्त करें। आँकड़े गढ़ने के बजाय अनुभव और विचार का सहारा लें। प्रश्नवाचक वाक्य पाठक को सोचने के लिए प्रेरित कर सकता है। प्रकृति की परस्पर निर्भरता को टूटती कड़ी के बिंब से व्यक्त करें। लेख का स्वर संवेदनशील रहे और अंतिम वाक्य आरंभ में उठी चिंता का आशापूर्ण उत्तर दे।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख **जीव-जंतुओं का घटता संसार**

कभी सुबह होते ही आँगन गौरैयों की चहचहाहट से भर जाता था। अब वही आँगन प्रायः चुप रहता है। यह चुप्पी केवल एक पक्षी की अनुपस्थिति नहीं, प्रकृति की चेतावनी है। जंगल कट रहे हैं, नदियाँ दूषित हो रही हैं और जीवों के घर उजड़ रहे हैं। कहीं शिकार, तो कहीं हमारी सुविधाओं का विस्तार उनके अस्तित्व पर भारी पड़ रहा है। क्या पृथ्वी पर केवल मनुष्य का अधिकार है? प्रत्येक जीव प्रकृति की व्यवस्था में अपना योगदान देता है। एक कड़ी टूटती है तो पूरा संतुलन डगमगाता है। हमें पेड़ लगाने, जलस्रोत बचाने और अवैध शिकार रोकने में भागीदार बनना होगा। विकास का अर्थ जीवन को उजाड़ना नहीं हो सकता। आइए, ऐसी दुनिया बनाएँ जहाँ आने वाली पीढ़ियाँ जीव-जंतुओं को केवल चित्रों में न पहचानें।

चरण 3: निष्कर्ष लेख का केंद्रीय संदेश है कि जीव-जंतुओं के आवास और जीवन की रक्षा करना पृथ्वी के संतुलन तथा मनुष्य के भविष्य की रक्षा करना है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों में एक प्रभावी दृश्य, संकट के कारण और संरक्षण का संकल्प जोड़ें; शीर्षक अलग रखें।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

"जिन विचारों को कह डालना हमारे लिए कतई कठिन नहीं होता, उन्हें लिख डालने का निमंत्रण एक चुनौती की तरह लगता है" क्यों ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न मौखिक अभिव्यक्ति और लिखित अभिव्यक्ति के अंतर की समझ जाँचता है। बोलने की सहजता के मुकाबले लेखन में विचारों का स्पष्ट संयोजन आवश्यक होता है।
- लेखन के लिए विचार, उपयुक्त शब्द, वाक्य विन्यास और तार्किक क्रम को एक साथ साधना पड़ता है।

चरण 1: चुनौती का कारण समझें बातचीत में वक्ता अपने हाव-भाव, स्वर और सामने वाले की प्रतिक्रिया की मदद लेता है। अधूरी बात भी प्रसंग से समझी जा सकती है। लेखक के पास यह सहारा नहीं होता; उसे पाठक तक अपना आशय केवल लिखे हुए शब्दों से पहुँचाना होता है। इसलिए विचारों को व्यवस्थित रूप देना जरूरी है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर बोलते समय स्वर, हाव-भाव और श्रोता की प्रतिक्रिया सहायक होते हैं। लेखन में विचारों को स्पष्ट, क्रमबद्ध और प्रभावी भाषा में व्यक्त करना पड़ता है। उपयुक्त शब्दों के चयन, वाक्य गठन और विचारों की सुसंगति की अपेक्षा लेखन को चुनौती बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष विचारों को केवल व्यक्त करना पर्याप्त नहीं; लेखन में उन्हें स्पष्ट, सुसंगत और पाठक के लिए बोधगम्य बनाना चुनौती

है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बोलने के सहारे और लिखने की अपेक्षाओं का अंतर बताकर चुनौती का कारण स्पष्ट करें।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :
रेडियो नाटक में संवादों की भूमिका स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; उसके नाटक में दर्शनीय घटनाओं, पात्रों और परिवेश को सुनने योग्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- संवाद कथानक को आगे बढ़ाते हैं और पात्रों के स्वभाव, संबंधों, भावनाओं तथा संघर्ष को उभारते हैं।

चरण 1: श्रव्य माध्यम की आवश्यकता समझें रेडियो का श्रोता मंच, वेशभूषा अथवा पात्रों के हाव-भाव नहीं देखता। इसलिए पात्रों की बातचीत से दृश्य और घटनाओं का संकेत मिलना चाहिए। संवाद स्वाभाविक, संक्षिप्त और पात्रानुकूल हों ताकि सुनते ही आशय स्पष्ट हो। ध्वनि प्रभाव वातावरण बना सकते हैं, पर कथानक और चरित्र के विकास में संवादों की प्रमुख भूमिका रहती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक में संवाद कथानक को आगे बढ़ाते तथा पात्रों का चरित्र, संबंध और मनोभाव स्पष्ट करते हैं। दृश्य माध्यम के अभाव में वे स्थान, परिस्थिति और घटनाओं का बोध कराते हैं। स्वाभाविक, संक्षिप्त और पात्रानुकूल संवाद श्रोता की कल्पना सक्रिय बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संवाद रेडियो नाटक में कथा और पात्रों को श्रोता तक पहुँचाने का प्रमुख साधन हैं; वे सुनकर दृश्य की कल्पना करने में सहायता देते हैं।

त्वरित सुझाव: रेडियो के श्रव्य स्वरूप को संवादों के तीन कामों से जोड़ें: कथाविकास, चरित्र उद्घाटन और परिवेश का बोध।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :
उलटा पिरामिड शैली के विकास की संक्षिप्त जानकारी दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार में सूचनाओं का क्रम उनके महत्त्व से तय होता है। उलटा पिरामिड शैली में सबसे आवश्यक तथ्य पहले और कम आवश्यक विवरण बाद में आते हैं।
- इस शैली के विकास का संबंध अमेरिकी गृहयुद्ध के समय तार से समाचार भेजने की परिस्थितियों से है।

चरण 1: विकास की परिस्थिति समझिए अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान संवाददाता तार द्वारा समाचार भेजते थे। तार-संपर्क टूटने की आशंका रहती थी और समाचार शीघ्र भेजना आवश्यक था। इसलिए मुख्य सूचना आरंभ में भेजी जाने लगी। इससे संपर्क बाधित होने पर भी समाचार का केंद्रीय तथ्य समाचारपत्र तक पहुँच जाता था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर उलटा पिरामिड शैली का विकास अमेरिकी गृहयुद्ध के समय हुआ। तार-संपर्क टूटने की आशंका के कारण संवाददाता सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना पहले भेजते थे। इसी से समाचार में मुख्य तथ्य पहले, फिर उनके विवरण और अंत में कम महत्त्वपूर्ण बातें देने की परंपरा बनी।

चरण 3: निष्कर्ष युद्धकालीन तार-संचार की जरूरत से विकसित इस शैली ने समाचार को घटते महत्त्व के क्रम में प्रस्तुत करने का रूप दिया।

त्वरित सुझाव: विकास पूछे जाने पर अमेरिकी गृहयुद्ध, तार-संपर्क की अनिश्चितता और मुख्य सूचना पहले भेजने का संबंध अवश्य जोड़ें।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

आर्थिक मामलों के पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आर्थिक पत्रकारिता अर्थव्यवस्था, व्यापार, बाजार और आर्थिक नीतियों की सूचनाएँ सामान्य पाठक तक पहुँचाती है।
- इस क्षेत्र की तकनीकी शब्दावली और आँकड़ों को सही अर्थ में सरल तथा उपयोगी बनाना आवश्यक है।

चरण 1: चुनौती का कारण स्पष्ट कीजिए आर्थिक विषयों में बजट, निवेश, उत्पादन तथा बाजार संबंधी अनेक जटिल अवधारणाएँ और तकनीकी शब्द आते हैं। सामान्य पाठक इन सभी का विशेषज्ञ नहीं होता। पत्रकार को विषय की पर्याप्त समझ रखते हुए तथ्यों और आँकड़ों की शुद्धता बनाए रखनी पड़ती है, ताकि सरल प्रस्तुति से अर्थ विकृत न हो।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आर्थिक पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती जटिल आर्थिक अवधारणाओं, तकनीकी शब्दावली और आँकड़ों को सामान्य पाठक की समझ में आने वाली सरल भाषा में प्रस्तुत करना है। पत्रकार को उनकी शुद्धता बनाए रखते हुए आम जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव भी स्पष्ट करने चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष आर्थिक विषयों को प्रामाणिक, सरल और आम पाठक के लिए बोधगम्य बनाना ही प्रमुख चुनौती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल आर्थिक ज्ञान का उल्लेख न करें; जटिल जानकारी को सामान्य पाठक के लिए सरल बनाने की बात स्पष्ट लिखें।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों की तुलना में मुद्रित माध्यम के पाठकों को कौन-कौन सी सुविधाएँ उपलब्ध हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित सामग्री पढ़ने की गति और समय पाठक स्वयं चुनता है। इसलिए सामग्री ग्रहण करने में उसे अधिक स्वतंत्रता मिलती है।
- लिखित सामग्री सुरक्षित रखी जा सकती है और आवश्यकता पड़ने पर उसे दोबारा पढ़कर समझा जा सकता है।

चरण 1: पाठक के नियंत्रण वाली सुविधाएँ पहचानिए समाचारपत्र या पत्रिका के पाठक को प्रसारण के निश्चित समय या गति के अनुसार चलना आवश्यक नहीं होता। वह किसी कठिन अंश पर ठहर सकता है, पहले पढ़े अंश पर लौट सकता है और उपयोगी सामग्री बाद के संदर्भ के लिए रख सकता है। ये सुविधाएँ विशेषकर गहन अध्ययन और सूचना को समझने में सहायक हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर मुद्रित माध्यम के पाठक अपनी रुचि, सुविधा और गति के अनुसार सामग्री पढ़ सकते हैं। वे किसी अंश पर ठहर सकते हैं, उसे बार-बार पढ़कर समझ सकते हैं तथा उपयोगी सामग्री सँभालकर रख सकते हैं। पढ़ने के लिए प्रसारण के निश्चित समय का बंधन नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी गति से पढ़ना, पुनर्पाठ और सामग्री का संग्रह मुद्रित माध्यम की प्रमुख पाठकीय सुविधाएँ हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना में पाठक की स्वतंत्रता पर ध्यान दें: कब पढ़ना है, कितनी गति से पढ़ना है और किस अंश को दोबारा पढ़ना है।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

व्यक्तिचित्र फीचर को रोचक, पठनीय और प्रभावशाली रूप में किस प्रकार तैयार किया जा सकता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिचित्र फीचर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व, जीवन और कार्यों को तथ्यपूर्ण तथा संवेदनशील ढंग से सामने लाता है।
- प्रत्यक्ष अवलोकन, बातचीत और प्रामाणिक प्रसंगों से व्यक्तित्व उभरता है; केवल उपलब्धियों की सूची पर्याप्त नहीं होती।

चरण 1: सामग्री और प्रस्तुति की योजना व्यक्ति से मिलकर उसकी बातचीत, व्यवहार, रुचियों और परिवेश को समझें। परिवार, सहयोगियों तथा उपलब्ध अभिलेखों से तथ्यों की पुष्टि करें। ऐसे प्रसंग चुनें जो उसकी विशिष्टता दिखाएँ। शुरुआत आकर्षक हो और विवरण एक केंद्रीय प्रभाव से जुड़े रहें। तथ्य चुनते समय व्यक्ति के सार्वजनिक कार्य और निजी विशेषताओं में उपयुक्त संतुलन रखें। उद्धरण उसी के वास्तविक कथन हों। दृश्यात्मक विवरण पाठक को व्यक्ति के निकट लाएँ, पर कल्पना को तथ्य का रूप न दें। प्रत्येक प्रसंग व्यक्तित्व के किसी पक्ष को स्पष्ट करे।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर व्यक्तिचित्र फीचर के लिए संबंधित व्यक्ति से मिलकर उसके स्वभाव, जीवन-संघर्ष, रुचियों और उपलब्धियों की प्रामाणिक जानकारी जुटानी चाहिए। उसकी बातचीत, हाव-भाव और परिवेश का सूक्ष्म निरीक्षण करना चाहिए। आरंभ किसी रोचक घटना या अर्थपूर्ण कथन से किया जा सकता है। छोटे प्रसंगों, सजीव वर्णन और उपयुक्त उद्धरणों से व्यक्तित्व उभारना चाहिए। भाषा सरल, आत्मीय और प्रवाहपूर्ण हो। तथ्यों का क्रमबद्ध चयन तथा प्रभावी शीर्षक इसे पठनीय बनाते हैं। अतिशयोक्ति और अनावश्यक प्रशंसा से बचकर संतुलित चित्र प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष प्रामाणिक तथ्यों, प्रतिनिधि प्रसंगों और सहज, चित्रात्मक भाषा के मेल से व्यक्तिचित्र फीचर रोचक तथा प्रभावशाली बनता है।

त्वरित सुझाव: व्यक्तिचित्र लिखते समय गुणों की सूची बनाने के बजाय ऐसा छोटा प्रसंग चुनें जिससे वह गुण स्वयं सामने आए।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

संवाददाता और विशेष संवाददाता के बीच के अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाददाता समाचार-संग्रह तथा घटनाओं की तथ्यात्मक रिपोर्टिंग करता है। उसकी जिम्मेदारी किसी क्षेत्र या नियमित विषय से जुड़ी हो सकती है।
- विशेष संवाददाता को किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान और अनुभव होता है। वह समाचार के साथ उसकी पृष्ठभूमि, कारण तथा प्रभाव का विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है।

चरण 1: अंतर के आधार पहचानना अंतर बताते समय कार्यक्षेत्र, विशेषज्ञता और प्रस्तुति की गहराई पर ध्यान दें। सामान्य संवाददाता भी किसी निश्चित विषय या क्षेत्र को देख सकता है; इसलिए उसे केवल सभी विषयों का समाचार देने वाला कहना ठीक नहीं होगा। विशेष संवाददाता का प्रमुख अंतर उसका अनुभव और विश्लेषणात्मक दायित्व है। उदाहरण में एक ही घटना लेकर दोनों की रिपोर्टिंग की प्रकृति स्पष्ट की जा सकती है। विशेष संवाददाता भी तथ्यों की पुष्टि करता है; विश्लेषण का अर्थ निजी अनुमान या अपुष्ट राय देना नहीं है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर संवाददाता अपने निर्धारित क्षेत्र की घटनाओं के समाचार जुटाकर भेजता है। वह मुख्यतः घटना के तात्कालिक तथ्यों और विवरणों की जानकारी देता है। विशेष संवाददाता किसी विषय में विशेषज्ञता तथा अनुभव रखता है। वह महत्त्वपूर्ण घटनाओं की पृष्ठभूमि, कारणों और संभावित प्रभावों का विश्लेषण भी करता है। उदाहरणतः संवाददाता बजट की घोषणाओं और करों में बदलाव की खबर देगा, जबकि आर्थिक विषयों का विशेष संवाददाता इन बदलावों का आम जनता, उद्योग तथा अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव भी स्पष्ट करेगा।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-संग्रह दोनों का कार्य है; विशेष संवाददाता विषयगत विशेषज्ञता के आधार पर समाचार का व्यापक संदर्भ और विश्लेषण भी देता है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय केवल पदनाम न समझाएँ; एक ही घटना का उदाहरण देकर तथ्यात्मक विवरण और विशेषज्ञ विश्लेषण का अंतर दिखाएँ।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण किस प्रकार किया जा सकता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कहानी के कथन और पात्रों के अंतर्द्वंद्व को मंच पर दिखाई तथा सुनाई देने योग्य बनाया जाता है।
- पात्रों की मूल विशेषताएँ सुरक्षित रखते हुए संवाद, अभिनय, वेशभूषा और मंचनिर्देशों से उनका चरित्र सामने आता है।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा उत्तर में पहले पात्रों के चयन और उनके मूल स्वभाव की रक्षा का उल्लेख करें। फिर बताएं कि कथावाचक द्वारा बताई गई बातें मंच पर संवाद और अभिनय में कैसे बदलती हैं। अंत में मंचीय सीमाओं के अनुसार पात्रों की संख्या तथा उनकी प्रस्तुति का समायोजन स्पष्ट करें।

चरण 2: रूपांतरण की व्यावहारिक प्रक्रिया उदाहरण के लिए, कहानी में किसी पात्र को चिंतित बताया गया हो तो नाटक में उसकी बेचैन चाल, टूटता स्वर या किसी दूसरे पात्र से उसका संवाद इस स्थिति को स्पष्ट कर सकता है। पात्र की हर मनोदशा लंबी व्याख्या से बताने की आवश्यकता नहीं होती। संवाद उसकी आयु, सामाजिक परिवेश और व्यक्तित्व के अनुकूल होने चाहिए। मंचनिर्देश संक्षिप्त तथा अभिनय योग्य रखें, ताकि कलाकार उन्हें व्यवहार में उतार सके। यह प्रक्रिया चरित्र को बदलती नहीं, उसकी प्रस्तुति का माध्यम बदलती है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण करते समय उनके स्वभाव, उद्देश्य और पारस्परिक संबंधों को समझना आवश्यक है। उनके चरित्र का परिचय कथावाचक के वर्णन के स्थान पर संवाद, हाव-भाव और क्रियाओं द्वारा दिया जाता है। आंतरिक भावों को उपयुक्त संवाद अथवा स्वगत कथन से व्यक्त किया जा सकता है। मंच की आवश्यकतानुसार गौण पात्र घटाए या संयोजित किए जा सकते हैं, किंतु मूल कथ्य प्रभावित नहीं होना चाहिए। वेशभूषा, भाषा, प्रवेश-प्रस्थान और मंचनिर्देश पात्रों को सजीव तथा विश्वसनीय बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष पात्रों की मूल पहचान सुरक्षित रखते हुए उन्हें संवाद, अभिनय और उपयुक्त मंचनिर्देशों के माध्यम से मंचीय रूप दिया जाता है।

त्वरित सुझाव: कहानी का वर्णन दोहराने के बजाय सोचें कि पात्र की बात दर्शक मंच पर कैसे देखेंगे या सुनेंगे।

6. धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटी सो बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।।
माँगि कै खैबौ, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ। [5 अंक]

6(i). काव्यांश का वर्ण्य विषय है – [1 अंक]

(A) समाज की आर्थिक स्थिति का वर्णन
(B) जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन
(C) समाज में विद्यमान भेदभाव का वर्णन
(D) धर्म के नाम पर हो रहे आडंबरों का वर्णन

सही उत्तर: (B) जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का केंद्रीय विषय चुनते समय बार-बार आने वाले शब्दों और कवि की प्रतिक्रिया को साथ पढ़ना चाहिए।
- यहाँ राजपूत, जुलाहा, जाति और विवाह के संदर्भ जाति-पाँति के सामाजिक भेद को सामने लाते हैं।

चरण 1: विषय का पाठगत आधार कवि को अलग-अलग जातिसूचक नामों से पुकारा जाता है। वे कहते हैं कि उन्हें किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना और किसी की जाति बिगाड़नी नहीं है। इन कथनों का सीधा संबंध जाति-पाँति के भेदभाव से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच माँगकर खाने का उल्लेख है, किंतु समूचे समाज की आर्थिक स्थिति का वर्णन नहीं, इसलिए (A) अनुपयुक्त है। (C) सामान्य सामाजिक भेदभाव की व्यापक बात करता है; (B) पाठ में स्पष्ट जातिगत संदर्भों को अधिक सटीक व्यक्त करता है। मस्जिद में सोने की बात होने मात्र से धार्मिक आडंबर विषय नहीं बन जाता, अतः (D) भी उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन।

त्वरित सुझाव: सामान्य और विशिष्ट दोनों विकल्प मिलें तो काव्यांश के बार-बार आए संकेतों से समर्थित विशिष्ट विकल्प चुनें।

6(ii). 'काहूकी बेटी सो बेटा न ब्याहब' – पंक्ति के माध्यम से कटाक्ष किया गया है – [1 अंक]

(A) समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था पर
(B) जाति आधारित वैवाहिक प्रथा पर
(C) पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता पर
(D) समाज की विघटनकारी व्यवस्था पर

सही उत्तर: (B) जाति आधारित वैवाहिक प्रथा पर

हल:

अवधारणा:

- किसी विशेष पंक्ति का आशय निर्धारित करते समय उसमें प्रयुक्त क्रिया और संबंध का सीधा संदर्भ प्रमुख होता है।
- बेटी और बेटे के ब्याह का उल्लेख जाति के आधार पर तय होने वाले विवाह-संबंधों पर कटाक्ष करता है।

चरण 1: पंक्ति का आशय तुलसी कहते हैं कि उन्हें किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना है। इसलिए जाति की शुद्धता बिगड़ने का भय दिखाकर उन्हें नीचा बताना व्यर्थ है। पंक्ति खास तौर पर विवाह में लागू जातिगत बंधनों पर चोट करती है।

चरण 2: विकल्पों में अंतर (A) पूरी जाति व्यवस्था की व्यापक बात करता है; पंक्ति में विवाह का विशिष्ट प्रसंग होने से (B) अधिक उपयुक्त है। यहाँ स्त्री और पुरुष के अधिकारों की तुलना नहीं की गई है, इसलिए (C) नहीं चुना जाएगा। (D) विघटनकारी व्यवस्था का

सामान्य कथन है, जबकि प्रश्न इसी पंक्ति के सीधे निशाने को पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : जाति आधारित वैवाहिक प्रथा पर।

त्वरित सुझाव: विशेष पंक्ति में 'ब्याहब' शब्द पहचानें; यही व्यापक जाति व्यवस्था और जाति आधारित विवाह के विकल्प में अंतर कराता है।

6(iii). तुलसीदास स्वयं को किसका दास मानते हैं ? [1 अंक]

(A) नियमों का

(B) परिस्थितियों का

(C) स्वयं का

(D) राम का

सही उत्तर: (D) राम का

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यक्ष कथन वाले प्रश्न का उत्तर कवि के अपने शब्दों से निश्चित करना चाहिए।
- 'गुलामु' का अर्थ दास है और 'राम को' उसके स्वामी का स्पष्ट निर्देश करता है।

चरण 1: निर्णायक शब्द पहचानना काव्यांश में स्पष्ट लिखा है कि तुलसी राम के गुलाम हैं। 'तुलसी सरनाम गुलामु है राम को' में कवि अपनी पहचान राम के सेवक के रूप में व्यक्त करते हैं। यह उनकी अटूट भक्ति और आत्मसमर्पण का परिचायक है।

चरण 2: बाकी विकल्प हटाना कवि समाज की रूढ़ियों के आगे झुकते नहीं हैं, इसलिए नियमों का दास बताने वाला (A) उचित नहीं है। परिस्थितियों का उल्लेख उनके स्वामी के रूप में नहीं आया, इसलिए (B) असमर्थित है। 'स्वयं का' कहने वाला (C) भी स्पष्ट पाठ के विरुद्ध है, क्योंकि उन्होंने अपना स्वामी राम को बताया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : राम का।

त्वरित सुझाव: ऐसे सीधे प्रश्न में 'किसका' का उत्तर देने वाले पद को रेखांकित करें; यहाँ 'राम को' निर्णायक है।

6(iv). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए :

कथन : परंपरावादी एवं रूढ़िग्रस्त समाज में रहते हुए भी तुलसी निर्विकार जीवन व्यतीत कर रहे थे।

कारण : वे सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्त थे। [1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(B) कारण सही है लेकिन कथन गलत है।

(C) कथन सही है लेकिन कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँचने के बाद उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध देखना चाहिए।
- यहाँ सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्ति का आशय सांसारिक लेन-देन और जाति आधारित वैवाहिक बंधनों से अनासक्ति है।

चरण 1: कथन की जाँच तुलसी लोगों को अपनी रुचि के अनुसार कुछ भी कहने देते हैं। जातिसूचक अपमान उनकी रामभक्ति और जीवनचर्या को विचलित नहीं करता। अत: रूढ़िग्रस्त समाज में रहते हुए भी निर्विकार जीवन जीने का कथन सही है।

चरण 2: कारण की जाँच वे विवाह-संबंध जोड़ने की आवश्यकता से इनकार करते हैं और माँगकर खाने तथा मस्जिद में सोने की बात कहते हैं। लेने-देने का आग्रह भी नहीं रखते। इस प्रसंग में सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्त होने का अर्थ इन्हीं सांसारिक निर्भरताओं और बंधनों से मुक्त होना है। कारण सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध सांसारिक संबंधों और लेन-देन पर निर्भरता न रहने से जाति की निंदा और लोकमत उन्हें विचलित नहीं करते। इसलिए कारण कथन की व्याख्या करता है। (A) तथा (B) कथन को गलत बताते हैं; (C) सही व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है। ये तीनों अनुपयुक्त हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: कारण में 'मुक्त' को प्रसंग के विवाह और लेन-देन संबंधी बंधनों से जोड़ें; फिर देखें कि इससे निर्विकारता कैसे समझ आती है।

6(v). 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' – से आशय है – [1 अंक]

(A) न लेना एक न देना दो

(B) किसी से कोई बुरी बात न कहना

(C) किसी से कोई संबंध न रखना

(D) बिना वजह की मुसीबत होना

सही उत्तर: (C) किसी से कोई संबंध न रखना

हल:

अवधारणा:

- लोकभाषा की अभिव्यक्ति का आशय पूरे प्रसंग से समझना चाहिए, केवल शब्दों का अक्षरश: अर्थ पर्याप्त नहीं है।
- लेने-देने से दूर रहने की बात सांसारिक लेन-देन और संबंधों में न उलझने का संकेत है।

चरण 1: प्रसंगानुसार अर्थ तुलसी राम के प्रति समर्पित होकर साधारण, निर्लिप्त जीवन जीने की बात करते हैं। किसी से एक लेना या दो देना नहीं चाहते। इसका भाव यह है कि वे सांसारिक लेन-देन और उससे उत्पन्न संबंधों में बँधना नहीं चाहते।

चरण 2: अन्य अर्थों की जाँच (A) केवल पंक्ति का शाब्दिक दोहराव है, उसके अभिप्रेत भाव को नहीं बताता। (B) बुरी बात न कहने से संबंधित है, जिसका यहाँ उल्लेख नहीं है। (D) मुसीबत होने की बात करता है, जबकि पंक्ति निर्लिप्तता की घोषणा है। दिए गए विकल्पों में (C) सांसारिक संबंधों से अनासक्ति का आशय व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : किसी से कोई संबंध न रखना।

त्वरित सुझाव: भावार्थ चुनते समय संख्याओं के शाब्दिक अर्थ में न अटकें; आसपास के पदों से वक्ता की अनासक्ति पहचानें।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'आत्मपरिचय' कविता के आधार पर लिखिए कि जग की ओर ध्यान न देने वाला कवि जग-जीवन का भार लिए क्यों फिरता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की निजी जीवन-दृष्टि और संसार के साथ उसके आत्मीय संबंध को साथ रखकर कथन का आशय समझना चाहिए।
- जग की ओर ध्यान न देना सामाजिक जीवन से पलायन नहीं, बल्कि लोकमत और रूढ़ अपेक्षाओं के दबाव से मुक्त रहना है।

चरण 1: कथन में निहित अंतर समझिए कवि संसार की प्रशंसा, आलोचना और सफलता के प्रचलित मानदंडों से अपना जीवन संचालित नहीं करता। वह अपनी अनुभूतियों, प्रेम और आंतरिक विश्वासों के अनुरूप जीता है। इसलिए जग की ओर ध्यान न देने का संबंध बाहरी दबाव से है; इसका अर्थ मनुष्यों के सुख-दुःख से उदासीन होना नहीं है।

चरण 2: उत्तर का आधार स्पष्ट कीजिए कविता में कवि अपने निजी सुख-दुःख को लेकर चलता है, लेकिन उसका हृदय प्रेम से भी भरा है। अतः उसका व्यक्तित्व संवेदनहीन नहीं है। उत्तर में इन दोनों पक्षों को जोड़ना आवश्यक है: संसार के निर्देशों को स्वीकार न करना और संसार के प्रति मनुष्य होने का दायित्व निभाना। भार का आशय केवल बोझ अथवा आर्थिक काम नहीं, जीवन के अनुभवों और संबंधों से जुड़ी जिम्मेदारी भी है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि जग की ओर ध्यान नहीं देता, अर्थात वह संसार की रूढ़ियों तथा प्रशंसा-निंदा के अनुसार जीवन नहीं जीता। फिर भी वह समाज का अंग है और उसके सुख-दुःख तथा उत्तरदायित्वों से जुड़ा है। उसकी संवेदना और प्रेम उसे लोगों से अलग नहीं होने देते। इसलिए निजी स्वतंत्रता बनाए रखते हुए भी वह जग-जीवन का भार लिए फिरता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि की स्वाधीन जीवन-दृष्टि और सामाजिक संवेदना साथ-साथ चलती हैं; इसलिए दोनों कथनों में वास्तविक विरोध नहीं है।

त्वरित सुझाव: ध्यान न देने को लोकमत से स्वतंत्रता समझिए और भार को संसार के प्रति आत्मीय उत्तरदायित्व से जोड़िए।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'बात सीधी थी पर' कविता से उद्धृत पंक्ति 'भाषा को सहूलियत से बरतने' का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखिए कि कवि ने भाषा की सहजता पर क्यों बल दिया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए भाषा का स्वाभाविक, अर्थानुकूल प्रयोग आवश्यक है।
- अनावश्यक भाषिक चमत्कार कथ्य को उलझाकर संप्रेषण में बाधा बन सकता है।

चरण 1: सहूलियत का आशय समझिए भाषा को सहूलियत से बरतना उसे विषय और आशय के अनुरूप सहज ढंग से प्रयोग करना है। इसका अर्थ लापरवाही नहीं है। कविता में सहज बात को प्रभावशाली बनाने के प्रयास में कवि भाषा के पेच में उलझ जाता है। इस अनुभव से स्पष्ट होता है कि भाषा पर अनावश्यक जोर डालने से मूल अर्थ की स्वाभाविकता नष्ट हो सकती है।

चरण 2: उत्तर का आधार स्पष्ट कीजिए कवि का अनुभव बताता है कि अच्छा शब्दचयन वही है जो आशय को खोलता है। केवल कठिन शब्दों से अभिव्यक्ति उत्कृष्ट नहीं बनती। भाषा साधन है और बात उसका उद्देश्य है। यदि साधन पर जरूरत से अधिक ध्यान देने से उद्देश्य ओझल हो जाए तो रचना का असर घटता है। इसलिए उत्तर में सहजता को विचार की स्पष्टता तथा पाठक तक उसके सफल संप्रेषण से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भाषा को सहूलियत से बरतने का अर्थ है भाव और विषय के अनुरूप उसका सहज, सरल तथा स्वाभाविक प्रयोग करना। शब्दों के आडंबर और अनावश्यक पेचीदगी से सीधी बात भी उलझ जाती है तथा उसका प्रभाव घटता है। कवि ने सहजता पर बल दिया है ताकि भाषा कथ्य को स्पष्ट रूप में पाठक तक पहुँचाए और अभिव्यक्ति की स्वाभाविक शक्ति बनी रहे।

चरण 4: निष्कर्ष भाषा की सार्थकता कथ्य को सहजता से पहुँचाने में है; प्रदर्शन की प्रवृत्ति उसके संप्रेषण को कमजोर करती है।

त्वरित सुझाव: सहूलियत को अर्थानुकूल सहज प्रयोग बताइए और फिर भाषा के पेच से कथ्य के बिगड़ने का संबंध स्पष्ट कीजिए।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

"उषा' कविता में प्रात:कालीन आकाश में होने वाले सूर्योदय का गतिशील चित्रण हुआ है।' पुष्टि कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के बिंबों का क्रम सूर्योदय की प्रक्रिया को दृश्य और गतिशील बनाता है।
- नीले, धूसर, लाल और सुनहरे प्रकाश का विकास समय के आगे बढ़ने का संकेत देता है।

चरण 1: दृश्यों का क्रम पहचानिए आरंभ में प्रात: का आकाश नीले शंख जैसा दिखाई देता है। इसके बाद राख से लीपे हुए गीले चौके और लाल केसर से धुली काली सिल के बिंब आते हैं। लाल खड़िया से मली स्लेट का दृश्य भी रंग के उभरने को व्यक्त करता है। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब उजास की चमक को मूर्त करता है। ये अलग-अलग दृश्य एक ही आकाश के लगातार बदलते रूप हैं।

चरण 2: उत्तर का आधार स्पष्ट कीजिए इन बिंबों में स्थिर वस्तुओं की उपमाएँ होते हुए भी पूरा दृश्य स्थिर नहीं है। एक बिंब से दूसरे बिंब की ओर जाने पर प्रकाश का नया रूप सामने आता है। आरंभिक अंधकार और धूसरता से लालिमा तथा चमक की ओर यह यात्रा ही गति है। अंत में सूर्य का उदय उस क्रम को पूरा करता है। इस प्रकार कविता किसी एक क्षण की तस्वीर के स्थान पर उषाकाल के विकसित होते दृश्य को प्रस्तुत करती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर उषा में आकाश का रंग और प्रकाश निरंतर बदलता है। पहले नीले शंख जैसा आकाश, फिर राख से लीपा गीला चौका और लाल केसर से धुली काली सिल दिखाई देती है। लाल खड़िया मली स्लेट तथा नीले जल में झिलमिलाती गौर देह के बिंब उजास बढ़ाते हैं। अंत में सूर्योदय होते ही उषा का सम्मोहक जादू टूट जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष बिंबों के क्रमिक परिवर्तन और अंत में सूर्योदय के उल्लेख से प्रात:काल का गतिशील चित्र साकार होता है।

त्वरित सुझाव: बिंबों को केवल गिनाइए नहीं; उनके बदलते रंगों को बढ़ते प्रकाश और सूर्योदय के क्रम से जोड़िए।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'सदा पंक पर ही होता, जल विप्लव प्लावन' – पंक्ति में प्रयुक्त 'पंक' और 'विप्लव' शब्द की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक का अर्थ कविता के सामाजिक संदर्भ से निर्धारित होता है।
- पंक का धरातल निम्न और उपेक्षित है; विप्लव व्यवस्था को बदलने वाली क्रांति का संकेत है।

चरण 1: प्रतीकों का सामाजिक संदर्भ समझिए पंक का सामान्य अर्थ कीचड़ है, पर यहाँ इसका आशय समाज के उपेक्षित और शोषित जन से है। विप्लव केवल जल की हलचल नहीं, क्रांतिकारी परिवर्तन का संकेत है। पंक्ति में वर्षा से आया प्रवाह नीचे के धरातल तक पहुँचता है; इसी तरह परिवर्तन का वास्तविक संबंध दीन-दुर्बल लोगों के जीवन से है।

चरण 2: उत्तर का आधार स्पष्ट कीजिए इस प्रतीकात्मक व्याख्या में वंचित जन की आशा और सामाजिक जागरण का भाव प्रमुख है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पंक समाज के दलित, शोषित और उपेक्षित जन का प्रतीक है। विप्लव क्रांति तथा व्यापक सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है। जैसे वर्षा का प्रवाह निचले धरातल तक पहुँचता है, वैसे ही क्रांति की चेतना वंचित जन में जागती है और उनके जीवन को बदलती है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक वंचित जन और विप्लव उनके जीवन में परिवर्तन लाने वाली क्रांतिकारी शक्ति का द्योतक है।

त्वरित सुझाव: पंक और विप्लव के शब्दार्थ के साथ उनके सामाजिक संकेत अवश्य लिखिए; उत्तर को केवल वर्षा तक सीमित न रखिए।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में 'यह अवसर खो देंगे' – पंक्ति में कौन से अवसर को खोने की बात कही जा रही है ? इससे मीडियाकर्मी के किस व्यवहार का पता लगता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता माध्यमों द्वारा पीड़ा के प्रदर्शन और संवेदनहीनता की आलोचना करती है।
- प्रसंग में अवसर का अर्थ प्रभावशाली करुण दृश्य रिकॉर्ड करने का मौका है।

चरण 1: अवसर का प्रसंग समझना कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति से उसकी पीड़ा संबंधी प्रश्न पूछता है। वह चाहता है कि व्यक्ति कैमरे के सामने रो पड़े और दर्शकों में करुणा उत्पन्न करने वाला दृश्य मिल जाए। समय सीमित होने के कारण उसे यह दृश्य हाथ से निकलने की चिंता है। अपाहिज की निजी गरिमा की अपेक्षा दर्शकों पर प्रभाव डालने की लालसा उसके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर यह अवसर अपाहिज व्यक्ति को कैमरे के सामने रुलाकर उसकी पीड़ा का प्रभावशाली दृश्य रिकॉर्ड करने का है। इससे मीडियाकर्मी की व्यावसायिक, स्वार्थपूर्ण तथा संवेदनहीन प्रवृत्ति प्रकट होती है; वह व्यक्ति के दुख को समझने के बजाय उसे कार्यक्रम की सफलता का साधन बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडियाकर्मी पीड़ा के सहानुभूतिपूर्ण निराकरण से अधिक उसके प्रदर्शन में रुचि रखता है।

त्वरित सुझाव: अवसर को अपाहिज की सहायता से न जोड़ें; उसे कैमरे के लिए करुण दृश्य पाने से जोड़ें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'पतंग' कविता से उद्धृत पंक्ति - 'डाल की तरह लचीले वेग से' का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में बच्चों की देह की लचक की तुलना डाल से की गई है।
- पतंग उड़ाते बच्चों की गति उनके उत्साह और निर्भयता को व्यक्त करती है।

चरण 1: उपमा और गति का संबंध डाल हवा के साथ झुककर फिर सीधी हो जाती है। इसी प्रकार बच्चे पतंग के पीछे भागते हुए अपने शरीर को सहजता से मोड़ते और संतुलित करते हैं। यहाँ लचीला वेग उनकी सक्रिय देह, तेज दौड़ और आनंदपूर्ण चंचलता की ओर संकेत करता है। बच्चों की गति में कठोरता नहीं, सहज प्रवाह है। वे पतंग के साथ मानो आकाश की ऊँचाइयों से जुड़ जाते हैं। उपमा उनके बचपन की स्फूर्ति और खेल में पूरी तरह डूब जाने की मन:स्थिति को भी उभारती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में पतंग उड़ाते बच्चों की तेज, लचीली और चंचल गति का चित्रण है। वे डाल की भाँति शरीर को मोड़ते हुए उत्साह से दौड़ते हैं। उनकी देह का लचीलापन, सहज संतुलन और निर्भय उमंग पतंग उड़ाने के आनंद को साकार करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति बच्चों के लचीले शरीर और उमंग भरी तेज गति का बिंब प्रस्तुत करती है।

त्वरित सुझाव: डाल की लचक को बच्चों की शारीरिक गति से जोड़कर उपमा का आशय स्पष्ट करें।

9. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती; पर 'नरो वा कुंजरो वा' कहने में भी विश्वास नहीं करती। मेरे इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये, भंडार-घर की किसी मटकी में कैसे अंतरहित हो जाते हैं, यह रहस्य भी भक्तिन जानती है। पर, उस संबंध में किसी के संकेत करते ही वह उसे शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे डालती है, जिसको स्वीकार कर लेना किसी तर्क-शिरोमणि के लिए संभव नहीं। यह उसका अपना घर ठहरा, पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है ! उसके जीवन का परम कर्तव्य मुझे प्रसन्न रखना है – जिस बात से मुझे क्रोध आ सकता है, उसे बदलकर इधर-उधर करके बताना, क्या झूठ है। इतनी चोरी और इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, नहीं तो भगवान जी कैसे प्रसन्न रख सकते और संसार को कैसे चला सकते ! [5 अंक]

9(i). गद्यांश में 'नरो वा कुंजरो वा' का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है ? [1 अंक]

(A) महाभारत के प्रसंग से अवगत कराने के लिए

(B) भक्तिन को युधिष्ठिर के समकक्ष रखने के लिए

(C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए

(D) भक्तिन को युधिष्ठिर से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

सही उत्तर: (C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- सांस्कृतिक संदर्भ का अर्थ गद्यांश में उसके प्रयोजन से निर्धारित होता है।
- लेखिका भक्तिन के सत्य और असत्य संबंधी व्यवहार का विश्लेषण करती हैं।

चरण 1: प्रसंग का प्रयोजन लेखिका कहती हैं कि भक्तिन सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती, पर अस्पष्ट, दोअर्थी कथन में भी विश्वास नहीं करती। यह तुलना उसके आचरण की विशेषता बताती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में महाभारत का परिचय उद्देश्य मान लिया गया है। (B) की समकक्षता तथा (D) की श्रेष्ठता गद्यांश सिद्ध नहीं करता। यहाँ पौराणिक संदर्भ व्यक्ति का चरित्र समझाने का साधन है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए।

त्वरित सुझाव: प्रसंग का स्रोत और लेखक द्वारा उस प्रसंग को लाने का उद्देश्य अलग पहचानें।

9(ii). भक्तिन घर में पड़े पैसों को मटकी में छिपाकर किस उद्देश्य से रखती थी ? [1 अंक]

(A) पैसों को सँभालकर रखने

(B) अन्य सेवकों की दृष्टि से बचाने

(C) आपातकाल में काम आने

(D) स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ समझने

सही उत्तर: (A) पैसों को सँभालकर रखने

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर भक्तिन द्वारा दिए गए तर्क से मिलता है।
- गद्यांश में उद्देश्य के लिए प्रत्यक्ष कथन को प्राथमिकता देनी चाहिए।

चरण 1: निर्णायक कथन भक्तिन घर को अपना मानती है। उसका तर्क है कि इधर-उधर पड़ा पैसा देखकर उसने उसे सँभालकर रख लिया; इसलिए उसके अनुसार यह चोरी नहीं है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) इसी कथन का सीधा रूप है। (B) में अन्य सेवकों से बचाने, (C) में भविष्य की आपातस्थिति और

(D) में श्रेष्ठता का उद्देश्य जोड़ा गया है; इनका उल्लेख गद्यांश में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है: पैसों को सँभालकर रखने।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य पूछे जाने पर पात्र का स्पष्ट तर्क खोजें; संभावित लेकिन अनकही वजह न जोड़ें।

9(iii). 'थोड़ा बहुत झूठ बोलना' के समर्थन में भक्तिन अपना आदर्श किसे मानती थी ? [1 अंक]

(A) हरिश्चंद्र

(B) यमराज

(C) युधिष्ठिर

(D) महादेवी

सही उत्तर: (B) यमराज

हल:

अवधारणा:

- शब्द का आशय उसके निकटवर्ती संदर्भ और क्रिया से निर्धारित होता है।
- भक्तिन अपने झूठ का समर्थन संसार का संचालन करने वाले धर्मराज के उदाहरण से करती है।

चरण 1: निर्णायक संदर्भ भक्तिन कहती है कि इतनी चोरी और इतना झूठ धर्मराज महाराज में भी होगा, नहीं तो भगवान को प्रसन्न रखकर संसार कैसे चला सकते। यहाँ संसार का संचालन करने वाले धर्मराज से यमराज अभिप्रेत हैं। भक्तिन इसी उदाहरण से अपने थोड़े झूठ को उचित ठहराती है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच (A) हरिश्चंद्र अटल सत्यवादिता के आदर्श हैं। (C) युधिष्ठिर से संबंधित नरो वा कुंजरो वा का पूर्व उल्लेख अलग प्रसंग है; इस प्रश्न में भगवान को प्रसन्न रखने और संसार चलाने वाले धर्मराज की बात है। (D) महादेवी को प्रसन्न रखना भक्तिन का उद्देश्य है, किंतु वे उसके तर्क का आदर्श नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: यमराज।

त्वरित सुझाव: धर्मराज का अर्थ केवल पूर्व उल्लेख से न चुनें; भगवान को प्रसन्न रखने और संसार चलाने का निकट संदर्भ देखें।

9(iv). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा।

कारण : समय और परिस्थिति के अनुसार मूल तथ्यों में जोड़-घटाव करती थी। [1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(B) कारण सही है किंतु कथन गलत है।

(C) कथन सही है किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता की अलग जाँच आवश्यक है।
- सही कारण वह है जो कथन के लिए गद्यांश आधारित आधार प्रदान करे।

चरण 1: कथन की जाँच गद्यांश स्पष्ट कहता है कि भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं है। अत: कथन गद्यांश के अनुरूप सत्य है।

चरण 2: कारण की जाँच लेखिका को क्रोध आने की आशंका होने पर भक्तिन बात को बदलकर बताती थी। इससे समय और परिस्थिति के अनुसार तथ्य में जोड़-घटाव करने की प्रवृत्ति पुष्ट होती है; इसलिए कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प तथ्यों को बदलना उसके दुर्गुणों में शामिल है; यही उसे पूर्णत: अच्छी कहने में कठिनाई का आधार बनता है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) और (B) सत्यता में गलत हैं, जबकि (C) दोनों के संबंध को गलत बताता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है: कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों को अलग सत्यापित करें, फिर देखें कि कारण कथन का आधार बनता है या नहीं।

9(v). महादेवी जी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन क्या करती थी ? [1 अंक]

(A) खूब मन लगाकर काम करती थी
(B) बातों को ढालकर बताती थी
(C) उनके सामने नहीं आती थी
(D) बातों को स्पष्ट रूप से बताती थी

सही उत्तर: (B) बातों को ढालकर बताती थी

हल:

अवधारणा:

- पात्र के व्यवहार की पहचान सीधे गद्यांश के कथन से होती है।
- भक्तिन का लक्ष्य लेखिका को प्रसन्न रखना और उनके क्रोध से बचना है।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण कहा गया है कि जिस बात से लेखिका को क्रोध आ सकता है, उसे भक्तिन बदलकर, इधर-उधर करके बताती है। वह अप्रिय तथ्य को सीधे प्रस्तुत करने के बजाय उसकी प्रस्तुति बदल देती है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना (B) का बातों को ढालकर बताना इसी व्यवहार का सटीक अर्थ है। (A) में मेहनत का उल्लेख है और (C) में सामने न आने का, पर ये यहाँ नहीं कहे गए। (D) स्पष्ट रूप से बताना तथ्य बदलकर बताने के विपरीत है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: बातों को ढालकर बताती थी।

त्वरित सुझाव: बदलकर, इधर-उधर करके बताने का अर्थ बात को ढालना है; इससे समानार्थी विकल्प चुनें।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :
'लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए' - 'बाजार दर्शन' पाठ में यह वाक्य क्यों और किस संदर्भ में कहा गया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आवश्यकताओं की स्पष्टता और बाज़ार के आकर्षण से बचाव।
- पाठ के प्रसंग से प्रमाण लेकर प्रश्न के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त, तर्कसंगत उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: कथन का संदर्भ लेखक बाज़ार की चकाचौंध के प्रभाव को समझाने के लिए लू और प्यास का उदाहरण देता है। जिस प्रकार

प्यासे व्यक्ति पर लू का बुरा प्रभाव पड़ सकता है, उसी प्रकार मन खाली होने पर मनुष्य बाज़ार की हर आकर्षक वस्तु खरीदना चाहता है। यहाँ खाली मन का आशय अपनी वास्तविक आवश्यकताओं का निश्चय न होने से है। इस प्रकार उपमा का केंद्र मन की तृप्ति है, जेब में धन का अधिक या कम होना नहीं। जरूरत का बोध ही चयन को दिशा देता है।

चरण 2: निहित सलाह पानी पीकर निकलना तृप्ति और तैयारी का संकेत है। बाज़ार जाते समय मन अपनी निश्चित आवश्यकताओं से भरा हो तो अनावश्यक वस्तुओं का आकर्षण कमजोर पड़ जाता है। लेखक खरीदारी को रोकता नहीं, बल्कि आवश्यकता और इच्छा में विवेकपूर्ण अंतर करने की सीख देता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर यह वाक्य बाज़ार के आकर्षण से बचने की सलाह के संदर्भ में कहा गया है। जैसे पानी पीकर निकलने से लू का प्रभाव कम होता है, वैसे ही अपनी आवश्यकताएँ स्पष्ट करके बाज़ार जाने से उसके जादू से बचा जा सकता है। भरा हुआ मन केवल उपयोगी वस्तुएँ चुनता है और अनावश्यक खरीदारी तथा असंतोष से सुरक्षित रहता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन का आशय है कि अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को पहचानकर बाज़ार जाना चाहिए।

त्वरित सुझाव: लू, पानी और तृप्ति की उपमा को क्रमशः बाज़ार, आवश्यकता की स्पष्टता और संयम से जोड़कर समझाइए।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

अनावृष्टि दूर करने के लिए गाँव के बच्चों और गाँव वालों द्वारा किए गए उपायों को आप कितना उचित मानते हैं ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के संदर्भ में तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकविश्वास का सम्मान और वैज्ञानिक दृष्टि से उसका मूल्यांकन।
- पाठ के प्रसंग से प्रमाण लेकर प्रश्न के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त, तर्कसंगत उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: गाँव में किए गए उपाय पाठ में सूखे से व्याकुल गाँव के लड़के इंदर सेना बनाकर वर्षा की प्रार्थना करते हैं। लोग उन पर पानी डालते हैं और उन्हें अनाज देते हैं। जीजी इस आचरण को दान, त्याग और सामूहिक आस्था से जोड़ती हैं, जबकि लेखक पानी की कमी में उसके बहाए जाने पर प्रश्न उठाता है।

चरण 2: तर्कपूर्ण मूल्यांकन इन उपायों से लोगों को आशा और सामुदायिक सहयोग मिलता है; इस मानवीय पक्ष का सम्मान उचित है। पर वर्षा होने और बच्चों पर पानी डालने के बीच वैज्ञानिक कारण-संबंध सिद्ध नहीं है। इसलिए जलसंकट में पानी बहाने के स्थान पर उसका संरक्षण करना चाहिए। आस्था को अंधविश्वास के कारण संसाधनों की हानि का साधन नहीं बनना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर अनावृष्टि में बच्चों की इंदर सेना का वर्षा के लिए प्रार्थना करना और गाँव वालों का उन्हें अनाज देना सामूहिक आशा तथा सहयोग के रूप में उचित है। किंतु बच्चों पर पानी डालकर वर्षा कराने का विश्वास वैज्ञानिक नहीं है। जलाभाव में पानी बहाना अनुचित है। लोकपरंपरा की सद्भावना बनाए रखते हुए जलसंरक्षण, वर्षाजल-संचयन और विवेकपूर्ण उपयोग अपनाना अधिक उपयोगी होगा।

चरण 4: निष्कर्ष इन उपायों का सहयोग और आस्था वाला पक्ष स्वीकार्य है, पर जल की बर्बादी और वर्षा संबंधी अंधविश्वास उचित नहीं हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में परंपरा के मानवीय पक्ष और उसके वैज्ञानिक मूल्यांकन, दोनों पर संतुलित तर्क दीजिए।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

शिरीष के माध्यम से लेखक ने, 'कालजयी अवधूत की भाँति विपरीत परिस्थितियों में भी अविचल खड़े रहने की प्रेरणा दी है।' पुष्टि कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विपरीत परिस्थितियों में मस्ती, कोमलता और जिजीविषा।
- पाठ के प्रसंग से प्रमाण लेकर प्रश्न के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त, तर्कसंगत उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: प्रकृति से मिलने वाला प्रमाण भीषण गर्मी, लू और सूखे वातावरण में भी शिरीष हरा-भरा रहता है और कोमल फूलों से खिल उठता है। बाहरी ताप उसकी सरसता को नष्ट नहीं कर पाता। लेखक इसी गुण में जीवन की कठिनाइयों के बीच अपनी आंतरिक प्रसन्नता बचाए रखने का संदेश देखता है। यह उदाहरण संकट से भागने के बजाय उसके बीच जीवन की सहजता और रचनात्मक शक्ति बनाए रखने का संदेश देता है।

चरण 2: अवधूत से तुलना का आशय अवधूत सांसारिक आसक्ति और परिस्थितियों के दबाव से मुक्त, मस्त और अनासक्त होता है। शिरीष भी प्रतिकूल वातावरण से पराजित हुए बिना अपना स्वभाव बनाए रखता है। उसकी दृढ़ता कठोर या संवेदनाहीन हो जाना नहीं है; वह विपरीत दशाओं में भी अपने कोमल फूलों की तरह प्रेम और सौंदर्य बाँटता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी हरा-भरा रहकर कोमल फूलों से खिलता है। वह बाहरी प्रतिकूलता से अपनी सरसता और मस्ती नष्ट नहीं होने देता। इसी कारण लेखक उसे कालजयी अवधूत जैसा मानता है। उससे प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य संकटों में धैर्य और अनासक्ति बनाए रखे तथा कठोर परिस्थितियों में भी अपनी संवेदनशीलता, प्रसन्नता और उदारता बचाए रखे।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष की प्रतिकूलता में भी बनी रहने वाली सरसता और अनासक्त मस्ती उसे कालजयी अवधूत का प्रतीक बनाती है।

त्वरित सुझाव: केवल दृढ़ता न लिखें; गर्मी में खिले कोमल फूलों को संवेदनशीलता और अनासक्ति से भी जोड़ें।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

वैश्वीकरण के इस दौर में क्या भगत जी का चरित्र बाज़ार को सार्थकता और समाज में शांति स्थापित कर सकता है ? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भगत जी का संतोष, सीमित लाभ और सामाजिक सद्भाव।
- पाठ के प्रसंग से प्रमाण लेकर प्रश्न के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त, तर्कसंगत उत्तर देना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार भगत जी चूरन बेचते हैं और अपनी निश्चित सीमित कमाई हो जाने पर बचा चूरन बच्चों को मुफ्त बाँट देते हैं। वे अधिक धन कमाने की होड़ में नहीं पड़ते। उनका आत्मसंयम बताता है कि आवश्यकता की पूर्ति के साथ दूसरों का सुख भी व्यापार में महत्त्व रखता है। इस आदर्श से ग्राहक को केवल लाभ का साधन मानने की प्रवृत्ति घटती है और मानवीय विश्वास बढ़ता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर हाँ, भगत जी का संतोषी और निस्पृह चरित्र आज भी उपयोगी है। वे सीमित कमाई से संतुष्ट होकर बचा चूरन बच्चों को बाँट देते हैं। उनका आदर्श लाभ की अंधी होड़ घटाकर बाज़ार को आवश्यकताओं की पूर्ति और समाज को सहयोग-सद्भाव की दिशा दे सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष भगत जी का संतोष और परोपकार बाजार को उपयोगी तथा सामाजिक संबंधों को अधिक शांतिपूर्ण बना सकता है।

त्वरित सुझाव: वैश्वीकरण पर सामान्य चर्चा के स्थान पर भगत जी की सीमित कमाई और मुफ्त चूरन बाँटने का उदाहरण दीजिए।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'शिरीष के फूल' पाठ में कबीर को शिरीष की भाँति क्यों बताया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के माध्यम से विपरीत परिस्थितियों में भी सरस और अनासक्त रहने की जीवन-दृष्टि समझाते हैं।
- कबीर और शिरीष की समानता केवल बाहरी रूप में नहीं, उनकी सहज मस्ती, निर्भीकता और कठिनाइयों से अप्रभावित रहने में है।

चरण 1: तुलना का आधार समझें भीषण गर्मी में भी शिरीष फूलता है और अपनी सरसता नहीं खोता। इसी प्रकार कबीर सामाजिक विरोध और रूढ़ियों के बीच निर्भय रहकर अपनी बात कहते हैं। परिस्थितियाँ दोनों की सहजता और मस्ती को नष्ट नहीं कर पातीं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कबीर शिरीष की तरह फक्कड़, मस्त और अनासक्त थे। सामाजिक विरोध तथा रूढ़ियों के बीच भी वे निर्भीक रहे और सहज भाव से सत्य कहते रहे। जैसे प्रचंड गर्मी शिरीष की सरसता नहीं मिटाती, वैसे ही कठिनाइयाँ कबीर की मस्ती नहीं छीनतीं।

चरण 3: निष्कर्ष कबीर की निर्भीक फक्कड़ता और विपरीत परिस्थितियों में भी बनी रहने वाली सहज मस्ती उन्हें शिरीष के समान बनाती है।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय शिरीष की गर्मी में सरसता को कबीर की विरोध के बीच निर्भीक मस्ती से जोड़ें।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ से उद्धृत कथन 'दासता केवल कानूनी पराधीनता ही नहीं है' – का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर स्वतंत्रता को केवल कानूनी अधिकार नहीं मानते; उसमें अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की वास्तविक स्वतंत्रता भी शामिल है।
- जाति-प्रथा जन्म के आधार पर काम तय करके व्यक्ति को अपनी क्षमता विकसित करने और जीवन की दिशा चुनने से रोकती है।

चरण 1: दासता का व्यापक अर्थ समझें कानूनी दासता में व्यक्ति किसी दूसरे के अधीन होता है। किंतु समाज जब किसी व्यक्ति को जन्म से निर्धारित व्यवसाय अपनाने के लिए बाध्य करता है, तब कानूनी स्वतंत्रता के बावजूद उसकी कर्म-स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। यह सामाजिक दबाव भी दासता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर दासता का अर्थ केवल किसी का कानूनी गुलाम होना नहीं है। ऐसी सामाजिक व्यवस्था भी दासता है, जिसमें व्यक्ति को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न मिले तथा दूसरों द्वारा निर्धारित काम करने के लिए विवश होना पड़े।

चरण 3: निष्कर्ष जन्म के आधार पर व्यवसाय थोपना और स्वेच्छा से काम चुनने की स्वतंत्रता छीनना भी दासता है।

त्वरित सुझाव: कथन का आशय बताते समय कानूनी स्वतंत्रता के साथ व्यवसाय चुनने की सामाजिक स्वतंत्रता का उल्लेख अवश्य करें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'यशोधर बाबू की यह विवशता है वह पुराने को अच्छा समझते हैं और वर्तमान से तालमेल नहीं बिठा पाते।' क्यों ?

'सिलवर वैडिंग' कहानी के इस कथन के संबंध में तर्कपूर्ण विचार दीजिए कि क्या उनका यह व्यवहार उचित है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के संस्कारों और नई पीढ़ी की बदलती जीवन-शैली के बीच के तनाव का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- चरित्र का मूल्यांकन करते समय उनकी सादगी और अपनत्व जैसे मूल्यों तथा परिवर्तन को सहजता से स्वीकार न कर पाने की सीमा को अलग-अलग समझना आवश्यक है।

चरण 1: पुराने जीवन से लगाव का कारण यशोधर बाबू के व्यक्तित्व पर किशनदा का गहरा प्रभाव है। उनके लिए पुराना जीवन केवल बीता समय नहीं, सादगी, अनुशासन और आत्मीय संबंधों की कसौटी है। इसलिए वे वर्तमान को बार-बार पुरानी कसौटी पर परखते हैं। बच्चों की आर्थिक सफलता, स्वतंत्र निर्णय और आधुनिक तौर-तरीके उन्हें सहज नहीं लगते।

चरण 2: कथानक से पीढ़ियों का अंतर पहचानें विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आधुनिक उत्सव उन्हें आत्मीय पारिवारिक आयोजन की तरह सहज नहीं लगता। भूषण का ड्रेसिंग गाउन देना भी उनकी अपनी जीवन-शैली से मेल नहीं खाता। फिर भी वे बेटे के साथ होने की इच्छा रखते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी असहजता में केवल विरोध नहीं, संवाद और अपनत्व की कमी की पीड़ा भी है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में तर्कपूर्ण उत्तर यशोधर बाबू किशनदा के संस्कारों, सादगी और आत्मीय संबंधों में पले हैं। इसलिए वे पुराने जीवन को आदर्श मानकर बदलते समय को उसी कसौटी पर परखते हैं। बच्चों की आधुनिक जीवन-शैली तथा विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का उत्सव उन्हें असहज करते हैं। भूषण का ड्रेसिंग गाउन भी उनके तौर-तरीकों से मेल नहीं खाता। उनकी मूल्यनिष्ठा और अपनत्व की अपेक्षा उचित हैं, किंतु हर परिवर्तन को संदेह से देखना उचित नहीं। उन्हें बच्चों की परिस्थितियाँ समझकर संवाद करना चाहिए। बच्चों को भी उनकी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। दोनों पीढ़ियों की संवेदनशीलता और पारस्परिक समझ ही इस दूरी को कम कर सकती है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू का पुराने मानवीय मूल्यों से लगाव उचित है, पर वर्तमान से तालमेल के लिए लचीला दृष्टिकोण और परिवार में परस्पर संवाद आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: मूल्यांकन में एकतरफा निर्णय न दें; किशनदा का प्रभाव, कहानी का एक प्रसंग और व्यवहार की सीमा जोड़कर संतुलित मत लिखें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'जूझ' कहानी आज के युवाओं के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करने की एक प्रेरक कथा है। उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में शिक्षा पाने की इच्छा और प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियों के बीच संघर्ष चित्रित है।
- आलोचनात्मक उत्तर में केवल प्रेरणा का सामान्य कथन पर्याप्त नहीं है; लेखक की परिस्थितियों, उसके प्रयास और उनसे मिलने वाली सीख को जोड़ना चाहिए।

चरण 1: संघर्ष के ठोस प्रसंग पहचानना लेखक के पिता खेती के काम को प्राथमिकता देते हैं और उसकी पढ़ाई रुकवा देते हैं। आर्थिक कठिनाइयों और पारिवारिक दबाव के कारण शिक्षा का मार्ग बंद होने लगता है। फिर भी लेखक पढ़ने की इच्छा नहीं छोड़ता। माँ का सहयोग और दत्ता जी राव का हस्तक्षेप उसे फिर विद्यालय जाने का अवसर दिलाते हैं। यह प्रसंग बताता है कि कठिनाई का सामना करने में संकल्प के साथ उचित सहयोग जुटाना भी आवश्यक है।

चरण 2: प्रयास और उपलब्धि का संबंध स्पष्ट करना विद्यालय लौटना संघर्ष का अंत नहीं है। लेखक को खेती की जिम्मेदारियों के साथ पढ़ाई करनी पड़ती है। वह समय निकालकर अध्ययन करता है। न. वा. सौंदलगेकर के काव्यपाठ से उसमें कविता के प्रति रुचि जगती है और वह स्वयं रचना करने का अभ्यास करता है। इस प्रकार वह श्रम, नियमित अभ्यास और शिक्षक की प्रेरणा से अपनी प्रतिभा विकसित करता है। उत्तर में इन प्रसंगों को आज के युवाओं के धैर्य, समय के सदुपयोग और आत्मविश्वास से जोड़ना उपयुक्त है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'जूझ' प्रतिकूल परिस्थितियों में हार न मानने की प्रेरक कथा है। आनंद की पढ़ाई पिता खेती के काम के लिए छुड़वा देते हैं, पर उसकी शिक्षा पाने की इच्छा बनी रहती है। माँ के सहयोग और दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से वह पुनः विद्यालय जाता है। खेतों में काम करते हुए पढ़ाई के लिए समय निकालना उसके दृढ़ संकल्प का प्रमाण है। शिक्षक सौंदलगेकर की प्रेरणा से उसमें काव्यरचना की रुचि भी विकसित होती है। वह अभावों को अपनी नियति मानकर निष्क्रिय नहीं बैठता। उसका संघर्ष युवाओं को धैर्य, परिश्रम, आत्मविश्वास और उपलब्ध अवसरों के सदुपयोग से लक्ष्य पाने की सीख देता है।

चरण 4: निष्कर्ष आनंद का जीवन दिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में शिक्षा की आकांक्षा, लगातार श्रम और प्रेरक सहयोग व्यक्ति की दिशा बदल सकते हैं। यही 'जूझ' की युवाओं के लिए प्रासंगिकता है।

त्वरित सुझाव: प्रेरक कथा सिद्ध करते समय पिता का विरोध, विद्यालय में वापसी और खेती के साथ पढ़ाई जैसे प्रसंगों को उनसे मिलने वाली सीख से जोड़ें।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :

सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल-संस्कृति' लेखक ने किस आधार पर कहा है ? वर्तमान समय में जल संरक्षण क्यों आवश्यक है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के अवशेषों के आधार पर सिंधु सभ्यता के नागरिक जीवन, नगर नियोजन और जल व्यवस्था की विशेषताएँ सामने आती हैं।
- प्रश्न के दोनों पक्ष आवश्यक हैं: पहले जल-संस्कृति कहने के पुरातात्त्विक आधार और फिर वर्तमान जीवन में जल संरक्षण की आवश्यकता स्पष्ट करनी है।

चरण 1: पाठ में जल व्यवस्था के प्रमाण पहचानना मोहनजोदड़ो में कुओं की बड़ी संख्या, घरों में स्नान की व्यवस्था, सार्वजनिक महाकुंड तथा पानी की निकासी के लिए बनी नालियाँ मिलती हैं। इनसे पता चलता है कि जल केवल पीने की आवश्यकता नहीं था; स्वच्छता, सामुदायिक जीवन और नगर की योजना में भी उसका विशेष स्थान था। महाकुंड की सुविचारित बनावट इस सभ्यता के विकसित जल प्रबंधन का उदाहरण है। इन्हीं ठोस प्रमाणों से लेखक की 'जल-संस्कृति' वाली संज्ञा को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 2: वर्तमान आवश्यकता से संबंध जोड़ना जनसंख्या बढ़ने, नगरों के विस्तार तथा कृषि और उद्योग की जरूरतों से जल की माँग बढ़ रही है। भूजल का अत्यधिक दोहन और जलस्रोतों का प्रदूषण उपयोगी जल को सीमित करते हैं। इसलिए जल संरक्षण पेयजल की उपलब्धता, खेती और पर्यावरण के लिए आवश्यक है। वर्षाजल संचयन, जलस्रोतों की रक्षा और पानी की बर्बादी रोकना इस आवश्यकता को पूरा करने के व्यावहारिक उपाय हैं। वर्तमान संदर्भ देते समय पाठ के ऐतिहासिक प्रमाण और आज की आवश्यकता अलग-अलग स्पष्ट रहें।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल-संस्कृति' वहाँ की सुव्यवस्थित जल व्यवस्था के आधार पर कहा है। मोहनजोदड़ो के अनेक कुएँ, घरों के स्नानघर, महाकुंड और जल निकासी की नालियाँ बताते हैं कि नागरिक जीवन में जल और स्वच्छता का महत्त्वपूर्ण स्थान था। जल के उपयोग और निकास की योजनाबद्ध व्यवस्था उनकी विकसित नागरिक चेतना का प्रमाण है। आज बढ़ती जनसंख्या, जलस्रोतों के प्रदूषण और भूजल के अत्यधिक दोहन से जल संकट गंभीर हो रहा है। पेयजल, कृषि, पर्यावरण और भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं के लिए जल संरक्षण अनिवार्य है। वर्षाजल संचयन, स्रोतों की रक्षा और अपव्यय रोककर हम इस दिशा में योगदान दे सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता के अवशेष जल के प्रति सजग नागरिक जीवन का प्रमाण हैं। आज उसी सजगता को जलस्रोतों की रक्षा

और सीमित जल के विवेकपूर्ण उपयोग में अपनाना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले भाग में कुएँ, स्नानघर, महाकुंड और नालियाँ लिखें; दूसरे भाग में जल संकट के कारण तथा संरक्षण की आवश्यकता जोड़ें।